प्रशन 3. विधा शीर्शक निबंधक लिखू।

उतर : - *ज्योतिशि बलदेव मिश्र संसकृतक प्रकाण्ड विद्वान छलाह । संस्कृत साहित्यक हिनका पर पूर्ण प्रभाव छल । अपन एहि निबंधक माध्यम सँ समस्त मैथिल बंधुकें विधाक महताकें जनबैत आग्रह कैलनि अछि जे जेना कमलवंधु आकाश चूरामणि श्री सूर्यनारायण कें विचारमे ई नहि छनि जे अमुक देश वा लोकमे हम अपन प्रकाश नहि करैत अछि । वा जे हमर आदर पूजा करैत आछि । विधा छोट पैध , गरिब अमिर , जाति धर्म आदिक बिनू कोनो विचार कैयने सभकें प्रदान कर्बाब लेल प्रस्तुत*

परमोपदेश कालिदास हमरा लोकनिक हेतु लिखने छथि ।

यस्मिन मही शासित वाणिनिना

निद्रां विहायधंपथे गतानाम ।

Scanned by CamScanner

वातोपि नास्त्रसयदंशुकानि

को लम्बेयदाहरणाय हस्तम॥

रघुवंश महाकाव्यमे उल्लेख अछि जे इक्ष्वाकु वंशक राजा दिलीप राज्यसुख करैत जखन बूड भ गेलाह परंच पुत्रसुखक अनुभव नहि भेलन्हि त एक दिन परम पूज्य गुरूवर महर्शि वशिश्ठक समीप जाय अपन व्यथा - कथा कहलनि। तखन परम दयालु गुरू श्रेस्ट वशिश्ट ध्यानस्थ भ पूर्वक सभ काजक अवलोकन क कहलथिन राजन। एक समय अपने देवराज इंद्रसँ भेंट क प्रिथ्वी पर अबैत रहि ताहिकाल कल्प्वृक्षक छाया तर कामधेनु गाय छलीह, अहाँ हुनकर कोनो पूजा वा आदर सत्यकार नहि कैल तखन अहा कें संतानक प्राप्ति होइत।

Scanned by CamScanner